ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्रा सोमः सदमित्तग भद्रम्। अथर्व0 7/18/2
जहां शान्ति वर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।
Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 39, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 जनवरी, 2016 से रविवार 24 जनवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा की पुस्तक मेला योजना के अन्तर्गत

प्रगति मैदान में वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार यज्ञ सम्पन्न

अभूतपूर्व दृश्यों का साक्षी रहा नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आर्य समाज का स्टाल

विगत वर्षों में अभी तक के सबसे बड़े प्रचार स्टाल पर उमड़ी भारी भीड़

विशेष कक्ष में विद्वानों से चर्चा कर युवाओं ने किया वेद एवं अन्य मत-मतान्तरों की शंकाओं का समाधान

पुस्तक मेले में मुस्लिम युवाओं ने भी खरीदे सत्यार्थ प्रकाश

वैदिक पुस्तकों का अवलोकन करता जनसमुदाय।

नई दिल्ली, प्रगति मैदान में 9 जनवरी 2016 प्रातः 11:30 बजे शुरू हुआ 24वां विश्व पुस्तक मेला 17 जनवरी 2016 को रात्रि 8:00 सम्पन्न हो गया। इस वर्ष आर्य समाज का साहित्य प्रचार स्टाल विगत वर्षों की अपेक्षा अभी तक का सबसे बड़ा स्टाल था। पुस्तक मेले में लगभग
18300 सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी,
86 सेट वेद,
100 प्रतियां उर्दू सत्यार्थ प्रकाश,
50 रुपये में 5 पुस्तकों के 700 सेट सहित 15 लाख रुपये से अधिक का

इंटरनेट के माध्यम से निरंतर प्राप्त हो रहे हैं वैदिक साहित्य के ऑर्डर

वैदिक साहित्य प्रचारित किया गया। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सम्पूर्ण हाल 12ए में केवल आर्य समाज का स्टाल दर्जनों इस्लामिक स्टॉलों पर भारी पड़ रहा था।

महर्षि दयानन्द और वेद की विचारधारा को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को आर्य जनता द्वारा दिये गए सहयोग से मात्र 10 रुपए में 25000 सत्यार्थ प्रकाश वितरित करने का लक्ष्य रखा था। इसके साथ-साथ वेद, उपनिषद, वेदांग, दर्शन एवं अन्य वैदिक आर्ष साहित्य पर भी मेले में विशेष छूट दी गई थी।

पुस्तक मेले में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अंग्रेजी साहित्य प्रेमियों के लिए हॉल नम्बर 6 में एक स्टाल न. 108 पर अंग्रेजी वेद, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य ऋषिकृत वैदिक साहित्य की भी विशेष रूप से व्यवस्था की गई थी।

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल द्वारा प्रदत्त सहयोग से किया गया, पुस्तक मेले में उर्दू सत्यार्थ प्रकाश श्री बलदेव राज महाजन जी द्वारा दिये गये सहयोग से आम जनता को केवल मात्र 70/- रुपये में दिया गया।

इस पुस्तक मेले में समस्त स्टालों की बुकिंग आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से प्रदत्त ...शेष पेज 4 पर

मेले में सत्यार्थ प्रकाश का जादू सर चढ़ बोला

प्रगति मैदान, दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में प्रचारार्थ कम मूल्य पर सत्यार्थ प्रकाश वितरण सेवा का गत दो दिन मुझे भी अवसर मिला। इस सेवा में छोटे-छोटे बालक, युवा, पुरुष, महिलाएं, वृद्ध सभी अत्यंत उत्साह वा मिशनरी भावना के साथ प्रातः से रात्रि 8 बजे पर्यन्त सत्यार्थ प्रकाश गैर आर्य समाजियों को उपलब्ध कराते और इसके महत्व के बारे में बताते रहे। यह दृश्य आर्यों के लिए उत्साह और प्रेरणादायक थे।

चूँकि मैं मुस्लिम भाईयों को लक्ष्य कर सत्यार्थ प्रकाश बेच रहा था अतः मैं उर्दू में सत्यार्थ प्रकाश भी लिए हुए था। तभी इसी सेवाकार्य में लगे मध्य प्रदेश के एक युवक आर्य सौरभ अग्रवाल से परिचय हुआ। वह भी उर्दू जानते है और अरबी भी, यह जान उत्सुकतावश मैंने अरबी जानने का रहस्य पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हें कुरान पूरी तरह से स्मरण है और वह उसके अर्थ भी जानते है। उनके अनुसार उन्होंने ऐसा पौराणिकता के गप्पोड़ों से तथाकथित हिन्दू धर्म के उपहास और अवैज्ञानिकता से दुखित हो कर इस्लाम की तरफ झुकाव हो जाने से सीखा था। फिर मस्जिदों में मौलानाओं की शरण में जा कर विधिवत नमाज अदा करने का सिलसिला शुरू हो गया। उन्होंने पूरी तरह से इस्लाम ग्रहण करने का निर्णय भी ले लिया था कि ईश कृपा से किसी आर्य सज्जन के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश का 14वां सम्मुलास उनके हाथ लगा। बस पढ़ते ही आँखें खुल गई। कुरान की पोल समझ में आ गई। पूरा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और इस्लाम लगभग ग्रहण कर चुका यह युवक सम्पूर्णतया ऋषि दयानंद का भक्त बन गया। लंबी शिखा, यज्ञोपवीत धारी हृष्ठ पृष्ठ यह युवक

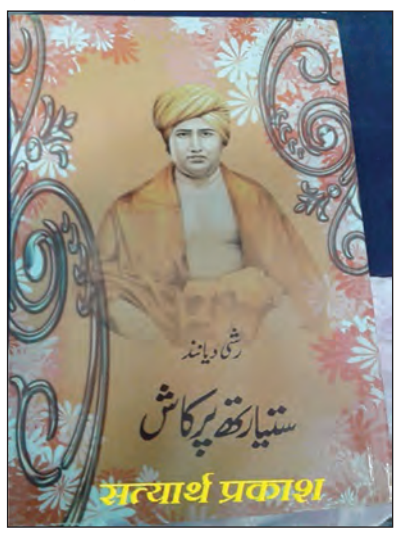

मध्य प्रदेश से दिल्ली विशेष रूप से सत्यार्थ प्रकाश का जादू बिखेरने ही आया था। उसे मेले में उछल कूद करते भाग-भाग कर सत्यार्थ प्रकाश बेचते देखते ही बनता था। सत्यार्थ प्रकाश का जादू वहां सबके सर चढ़ कर बोल रहा था। ऐसे ही अनेकों युवक, बच्चे-बूढ़े, महिलाएं जिस उत्साह से सत्यार्थ प्रकाश बेच रहे थे उसने मेरे मन से आर्यसमाज की निष्क्रियता को लेकर उपजी निराशा को हर लिया। मेरे मन मस्तिष्क में नव ऊर्जा संचारित करने के लिए यह दोनों दिन बहुत महत्वपूर्ण रहे।

संयोग की बात है कि स्वाध्यायशील उक्त महान आर्य युवक हमारे इसी महान समूह के सदस्य के रूप में पहले से ही इसकी गरिमा और शोभा को बढ़ा रहे हैं।

अतः हमारे गौरव श्री आर्य सौरभ अग्रवाल जी से मैं अनुरोध करूँगा कि मेरी इस पोस्ट के प्रत्युत्तर में वे स्वयं भी इस पर अथवा अपने जीवन के महत्वपूर्ण घटनाक्रम पर कुछ बताएं।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश अजय है विजयी है। उसका जादू सार्वकालिक और सार्वभौमिक है और रहेगा।

- सुभाष दुआ

स्वाध्याय

हृदय में तेरी तरंगे ठाठें मार

ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया।
तेभिर्नः सोम मृळय।।
ऋषिः-अमहीयुः।। देवता-पवमानः सोमः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय-मानसरोवर में कुछ न कुछ तरंगे सदा उठा ही करती हैं। चारों ओर होने वाली घटनाओं में से मनुष्य का मानस-सर नाना प्रकार से क्षुब्ध होता रहता है, परंतु हे सोम! मैं अपने मानस को पवित्र बना रहा हूं। इसलिए पवित्र बना रहा हूं, जिससे इसमें तेरी जगद्-व्यापक धारा से आई हुई तरंगें ही पैदा हों; अन्य किसी प्रकार की क्षुद्र तरंगे पैदा न हों। हे सोम! अपनी शीतल सुखदायिनी और ज्ञानामृतवर्षिणी धाराओं से तुमने इस जगत् को व्याप्त कर रखा है। इन्हीं द्वारा यह जगत् धारित हुआ है, नहीं तो इस जगत् का सब जीवन-रस न जाने कब का सूख चुका होता। मैं देखता हूं कि तुम्हारी इस जीवनरसदायिनी दिव्य धारा का मनुष्यों के पवित्र हुए अन्तः करणों के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो जाया करता है। जैसे कि चन्द्रमा के (भौतिक सोम के) आकर्षण से समुद्र-जल में ज्वार भाटा उत्पन्न होता रहता है, उसी प्रकार हे सच्चे सोम! मनुष्य के पवित्र हुए मनः सरोवर में भी तेरी सोमधारा के महान् आकर्षण से उच्च तरंगे उठने लगती हैं, ऊंचे-ऊंचे, व्यापक, सनातन भावावेश उठने लगते हैं। विश्वप्रेम, वीरता, अदम्य उत्साह, सर्वार्पण कर डालने की उमंग दुःखितमात्र पर दया, इत्यादि ऐसे सनातन व्यापक भावावेश हैं जो तेरी जगद्-धारक महान् धारा के अनुकूल हैं। बस, पवित्र हुए अन्तः करणों में तेरी महाशक्तिमती धारा के अनुसार ये ही तेरी ऊर्मियां, तेरी तरंगे अभिक्षरित हुआ करती हैं। हे सोम! मुझे अब इन्हीं सत्यमयी व्यापक तरंगों के मन में उठने से सुख मिलता है। वे राग-द्वेष की हवा से उठने वाली क्षुद्र भावावेशों की तरंगे, वे मन को क्षुब्ध करने वाले एक पक्षीय ज्ञान से होने वाले छोटे-छोटे अनुराग, मोह, शंका, भय, उत्कण्ठा, कामना आदि की तरंगे मुझे सुख नहीं देती, किन्तु क्लेशरूप दिखाई देती हैं। इसलिए हे मेरे सोम! मेरे मानस में उन्हीं तरंगों को उठाकर मुझे सुखी करो जो तरंगें पवित्र हृदयों में तुम्हारी धारा से उठती हैं। बस, ये ही उच्च भावावेश, ये ही व्यापक सनातन महान् भावावेश, मेरे मानस में उठा करें-ये ही तरंगे बार-बार उठें, खूब उठें, खूब ऊंची-ऊंची उठें-ऐसी ऊंची और महान् उठें कि इन आनन्ददायक भावावेशों में उठता हुआ मैं तन्मग्न होकर तेरी ऊंचाई के संस्पर्श का सुख अनुभव कर सकूं।

शब्दार्थः- ते ये ऊर्मयः- तेरी जो तरंगे धारया-जगत् के धारण करने वाली तेरी जगत्- व्यापक ज्ञानधारा द्वारा पवित्रं अभिक्षरन्ति-मनुष्य के पवित्र हुए अन्तः करण में प्रकट होती हैं, उठती हैं सोम-हे सोम! तेभिः-उन तरंगों से नः मृळय-हमें आनन्दित कर दो।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

महाहिंसा का तांडव है यह पर्व

विचारवान लोग जहाँ अब पूरे विश्व में अपनी वैदिक संस्कृति का डंका बजा रहे हैं वहीं हमारे देश में हो रहे कुछ घृणित कार्य हमे शर्मिदा करते हैं। कल एक ऐसी ही खबर पढ़कर मन फिर द्रवित हो गया। खबर थी- हिमाचल प्रदेश में सिरमौर जिले में मनाया जाने वाला माघी त्यौहार शुरू हो गया है। दो दिन के भीतर यहां 70 पंचायतों में करीब 50 हजार से ज्यादा बकरे काटे जा चुके हैं। यहां देवी माता को खुश करने के लिए दी गई 50 हजार बकरों की बलि। भला कोई माता किसी दूसरी माँ के बच्चों के खून से खुश हो सकती है? हत्या करना पाप है, इस में चाहे कोई जीव क्यों न हो। पूरे महीने मनाये जाने वाला यह पारम्परिक त्यौहार पूरे माघ महीने में मनाया जाता है। सोमवार और मंगलवार को मां काली की पूजा की जाती है। उत्तराखण्ड के जोनसार बाबर की 105 पंचायतों में भी यह त्योहार मनाया जाता है। हर परिवार अपने घर के आंगन में बकरे काटता है। इस त्योहार को कुछ इलाकों में 'भातियोज' भी कहा जाता है। किवद्वंती के अनुसार वर्षो पहले काली माँ का रथ टूट गया था उसके कोप से बचने के लिए सेंकडों बकरों को काटकर काली माँ को प्रसन्न किया जाता है।

वैदिक धर्म में जीव-हिंसा को पाप माना गया है। जो धर्म प्राणियों की हिंसा का आदेश देता है, क्या वह कल्याणकारी हो सकता हैं? इसमें किसी प्रकार भी विश्वास नहीं किया जा सकता। धर्म की रचना ही संसार में शांति और सद्भाव बढ़ाने के लिये हुई है। यदि धर्म का उद्देश्य यह न होता तो उसकी इस संसार में आवश्यकता न रहती। विद्वानों का मत है कि वैदिक रीति में क्षेत्रीय लोक परम्पराओं की धाराएँ जुड़ती गयीं जिसे बाद में पाखंडियों द्वारा इसी संस्कृति का हिस्सा बताया जाने लगा। जैसे वट वृक्ष में असंख्य लताएँ लिपटकर अपना अस्तित्व बना लेती हैं लेकिन वे लताएँ वृक्ष नहीं होती उसी तरह यह बलि प्रथा व अन्य कुरीतियाँ मानने वाले लोग हिन्दू हो सकते हैं पर वैदिक धर्म का हिस्सा नहीं हो सकते। बलि प्रथा का प्रचलन हिन्दुओं के तांत्रिकों के सम्प्रदाय में देखने को मिलती है किन्तु यह परम्परा पाशविक है इसे धार्मिक परम्परा कहना भी धर्म शब्द का अपमान है पशु-बलि करने वाले लोग बहुधा देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिये ही उनके सामने अथवा उनके नाम पर जानवरों और पक्षियों आदि निरीह जीवों का वध किया करते हैं। इस अनुचित कुकर्म से देवी- देवता प्रसन्न हो सकते हैं, ऐसा मानना अन्ध-विश्वास की पराकाष्ठा है। उनकी महिमा को समाप्त करना और हत्यारा सिद्ध करना है।

अपने को हिन्दू कहने और मानने वाले अभी भी अनेक धर्म ऐसे हैं, जिनमें पशु-बलि की प्रथा समर्थन पाये हुए हैं। ऐसे लोग यह क्यों नहीं सोचते कि हमारे देवताओं एवं ऋषियों ने जिस विश्व-कल्याणकारी धर्म का ढाँचा इतने उच्च-कोटि के आदर्शों द्वारा निर्मित किया है। जिनके पालन करने से मनुष्य देवता बन सकता है, समाज एवं संसार में स्वर्गीय वातावरण का अवतरण हो सकता है, उस धर्म के नाम पर हम पशुओं का वध करके उसे और उसके निर्माता अपने पूज्य पूर्वजों को कितना बदनाम कर रहे हैं। धर्म के मूलभूत तत्त्व-ज्ञान को न देखकर अन्य लोग धर्म के नाम पर चली आ रही अनुचित प्रथाओं को धर्म का आधार मान कर उसी के अनुसार उसे हीन अथवा उच्च मान लेते हैं, अश्रद्धा अथवा घृणा करने लगते हैं। इस प्रकार धर्म को कलंकित और अपने को पाप का भागी बनाना कहाँ तक न्याय-संगत है, उचित है। इस बात को समझें और पशु-बलि जैसी अधार्मिक प्रथा का त्याग करें भेड़ें, बकरे ऊंट आदि ईश्वर की ही सन्तानें हैं, उन्हीं की उत्पत्ति हैं और उन्हीं की सम्पत्ति हैं। आप क्या कुर्बान करेंगे? ईश्वर का दान फिर से ईश्वर पर कुर्बान? क्या किसी बालक को खुश करना है? जबकि ईश्वर ने जो दान एक बार दे दिया, वापस लेने की उसे कत्तई चाहत नहीं। ईश्वर दाता है, याचक नहीं।

ईश्वर इस तरह की हिंसा से कभी भी खुश होने वाले नहीं। उन्होंने जगह-जगह प्राणियों के साथ दया संवेदना की उम्मीद रखी है। वास्त्विकता तो यह है कि इस स्वार्थ में लाखों जानवर बलि चढ़ जाते हैं। महाहिंसा का तांडव है यह पशु-बलि की कुरीति। आखिर धर्म के नाम पर यह घ्रणित, पाशविक कार्य कब तक चलते रहेंगे क्या इस हिंसा को रोकने के लिये भी कानून की आवश्कता है या लोग स्वयं इन हिसंक कृत्यों से दूर हो जायेंगे यदि नहीं तो हम जरुर इसके लिये कानून का दरवाजा खटखटायेंगे।

-राजीव चौधरी

ग्रन्थ परिचय

स्वयं कथित व लिखित जीवन चरित

प्रश्न 1: हम महर्षि दयानन्द का विभिन्न लेखकों जैसे स्वामी सत्यानन्द जी, पं. लेखराम जी, देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय आदि द्वारा लिखित जीवन-चरित्र पढ़ते हैं। इनकी प्रामाणिकता का आधार क्या है?

उत्तरः प्रायः सभी लेखकों द्वारा रचित महर्षि के जीवन -चरित का आधार स्वयं महर्षि द्वारा लिखित व वर्णित उनका जीवन-चरित है। इसी आधार पर ये जीवन चरित प्रामाणिक माने जाते हैं।

प्रश्न 2. क्या महर्षि ने स्वयं भी अपनी आत्मकथा लिखी है?

उत्तरः महर्षि ने अपनी आत्मकथा संक्षेप में लिखी भी और पूना नगर में लोगों के आग्रह पर अन्तिम व्याख्यान में संक्षिप्त रूप से अपनी आत्मकथा का मौखिक वर्णन भी किया है। महर्षि के जीवन-चरित को समझने व जानने के लिए यह सामग्री अत्युपयोगी है। यही कारण है कि उनके जीवन-चरित को लिखते हुए प्रायः सभी लेखकों ने इस सामग्री का उपयोग किया है।

प्रश्न 3. अपनी आत्मकथा सम्बन्धी व्याख्यान महर्षि ने कब दिया था।?

उत्तरः अपनी आत्मकथा सम्बन्धी व्याख्यान महर्षि ने 4 अगस्त, 1975 पूना नगर में दिया।

प्रश्न 4: किन लोगों के आग्रह पर महर्षि ने आत्मकथा का व्याख्यान दिया था?

उत्तरः ऐसी महान् आत्मा के वर्तमान जीवन की उत्पति, पालन-पोषण, माता-पिता एवं जीवन सम्बन्धी घटनाओं के विषय में जिज्ञासा का होना स्वाभाविक ही है। अतः अनेक लोग महर्षि से उनके जन्म स्थान, माता-पिता, शिक्षा ब्राह्मणत्व एवं जीवन की पूर्व घटनाओं को जानना चाहते थे। जैसा कि पूना व्याख्यान में महर्षि कहते हैं, 'हमसे बहुत से लोग पूछते हैं कि हम कैसे जानें कि आप ब्राह्मण हैं और कहते हैं कि आप अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों की चिट्ठियां मंगा दें या आपको जो पहचानता हो, उसको बतलावें। इसीलिए मैं अपना कुछ वृत्तान्त कहता हूं।

'दूसरे देश की अपेक्षा गुजरात में कुछ मोह अधिक है। यदि मैं अपने पूर्व मित्रों तथा सम्बन्धियों को अपना पता दूं या पत्र व्यवहार करूं तो मेरे पीछे एक ऐसी व्याधि लग जायेगी जिससे कि मैं छूट चुका हूं। इस भय से कि कहीं वह बला मेरे पीछे न लग जावे, पत्रादि मंगा देने की चेष्टा नहीं करता।'

प्रश्न 6: उपर्युक्त व्याख्यान के अतिरिक्त महर्षि ने अपनी आत्मकथा (जीवन-चरित) कब और कहां लिखी थी?

उत्तरः थियोसोफिकल सोसाइटी के कर्नल आल्काट महोदय के आग्रह पर महर्षि ने 'थियोसोफिस्ट पत्रिका' में अपना जीवन-चरित तीन किश्तों में लिखकर भेजा था। इसका अंग्रेजी अनुवाद क्रमशः 1) पहली किश्त (जन्म से लेकर ऋषिकेश यात्रा पर्यन्त) अक्तूबर सन् 1879 के अंक में पृष्ठ 9-12 तक, 2) दूसरी किश्त (टिहरी से जोशी मठ यात्रा तक) दिसम्बर 1879 के अंक में पृष्ठ 66-68 तक, तथा 3) तीसरी किश्त (बदरीनारायण से नर्मदा तट की यात्रा तक) नवम्बर 1880 के अंक में छपी थी।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

भारत मां का वीर सपूत- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत मां का वीर सपूत- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
नाम अमर कर गये जगत में, नेता वीर सुभाष महान।
युग नायक ने, सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

माता प्रभावती विदूषी ने जो गोद खिलाया था।
देश धर्म पर मिट जाने का उत्तम पाठ पढ़ाया था।।
श्री जानकी नाथ पिता ने भारी लाड़ लड़ाया था।
सच्चाई का पालन करना, वैदिक ज्ञान सिखाया था।।

धर्म-कर्म का, पुण्य-दान का प्यारे नेता को था ज्ञान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

बैरिस्टरी पास करके वे, जब भारत वापस आए।
दयनीय दशा देख भारत की, नेता मन में घबराए।।
स्वामी श्रद्धान्नद तिलक ने, वीर पुरुष वे समझाए।
स्वतन्त्रता की लड़ो लड़ाई, हानि लाभ सब दर्शाए।।

नेताओं की शिक्षाएं सुन, करके हर्षाएं बलवान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

आजादी की लड़ी लड़ाई, लिए विरोधी सब निस्तेज।
सुभाष चन्द्र का जोश देखकर कांप उठे पापी अंग्रेज।।
होकर के भयभीत उन्हें, अंग्रेजो ने पहुचाया जेल।
नेता जी ने जेल काटना, समझा था बच्चों का खेल।।

संकट में ही वीर पुरुष की, मित्रो! हाती है पहचान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

वेश बदलकर के नेता जी, साफ जेल से निकल गए।
पहुंच गए बर्लिन में योद्धा, बन हिटलर के मित्र नए।।
आजाद हिन्द बनाई सेना, ऐसा अद्‌भुत काम किया।
मुझे खून दो, आजादी लो, युवको को सन्देश दिया।।

बर्लिन से उनका भाषन सुन, सारी दुनियां थी हैरान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।
दिल्ली चलो लगाया नारा, किया घोर संग्राम सुनो।
नेता वीर सुभाष चन्द्र का, जग में चमका नाम सुनो।।
गांधी और जवाहर दोनों, उनका देते साथ मगर।
भारत मां के वीर पुत्र वे, निश्चित लेते जीत समर।।

बोरी, बिस्तर बांध भाग जाते, सब गोरे बेईमान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

कहां गये प्यारे नेता जी, धूमिल अभी कहानी है।
हमने उनकी वीर कथा, आजाद फौज से जानी है।।
हे भगवान दया करके, भारतियों की विनती सुन लो।
भारत के नेताओं को, दो सुमति दयानिधि दया करो।।

'नन्दलाल' नेता जी जैसे, सब दे जोशीले व्याख्यान।
युग नायक ने सकल जगत में, भारत की ऊंची की शान।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, पलवल (हरियाणा)

40वां अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला प्रगति मैदान, कोलाकाता में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से सजेगा वैदिक साहित्य स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विगत वर्षो से वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार के उद्‌देश्य से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लगने वाले पुस्तक मेलों में अपना स्टाल लगाती आ रही है। इसी सिलसिले में दिनांक 26 जनवरी से 7 फरवरी 2016 के मध्य 40वें अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, कोलकाता में लगने वाले पुस्तक मेले में सभा वैदिक साहित्य स्टाल लगाने जा रही है। यह वैदिक स्टाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ-साथ आर्य समाज, 19 विधान सरणी, कोलकाता (प. बंगाल) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। कृपया मेले में अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- श्री राजेन्द्र कुमार मो.09458228581

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2072-73 तद्नुसार सन् 2016

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष शुक्ल, 4 वि. 2072	13/01/2016	बुधवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, 5 वि. 2072	14/01/2016	गुरुवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्ण, 2 वि. 2072	26/01/2016	मंगलवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2072	12/02/2016	शुक्रवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2072	2/03/2016	बुधवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2072	4/03/2016	शुक्रवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2072	7/03/2016	सोमवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2072	11/03/2016	शुक्रवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2072	23/03/2016	बुधवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2073	8/04/2016	शुक्रवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2073	15/04/2016	शुक्रवार
12.		वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 7 वि. 2073	13/04/2016	बुधवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख कृष्ण 4 वि.2073	26/04/2016	मंगलवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2073	5/08/2016	शुक्रवार
15		स्वतन्त्रता दिवस	श्रावण शुक्ल, 12 वि. 2073	15/08/2016	सोमवार
16.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2073	18/08/2016	गुरुवार
		हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2073		
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2073	25/08/2016	गुरुवार
18.		गांधी जयन्ती	अश्विन शुक्ल, 2 वि. 2073	2/10/2016	रविवार
19.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2073	11/10/2016	मंगलवार
20.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2073	13/10/2016	गुरुवार
21.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2073	30/10/2016	रविवार
22.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण 10, वि. 2073	23/12/2016	शुक्रवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

आर्य पर्वों के साथ राष्ट्रीय पर्वों को सम्मिलित करके उपरोक्त संशोधित सूची पुनः प्रकाशित की जा रही है - सम्पादक

पृष्ठ 1 का शेष

प्रगति मैदान ...

सहयोग से कराई गई थी। आर्यजनों ने अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के वैदिक साहित्य स्टालों पर पहुंच कर कार्यत्ताओं का उत्साह वर्धन किया। साहित्य प्रचार स्टालों पर अपनी सेवाएं प्रदान करने वाले महानुभावों में पुस्तक मेले के संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी, सभा उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान, श्री ओम प्रकाश आर्य, सभा मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री एस. पी. सिंह, डॉ. मुकेश आर्य, श्री धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. विवेक आर्य, श्री वेदव्रत, श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री आशीष आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री विनोद कुमार आर्य, श्रीमती उर्मिला आर्या, श्री देवराज आर्य, डा. मुकेश कुमार आर्य, श्री राजीव आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री ओम प्रकाश आर्य, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, श्री आविष्कार आर्य, श्री तेजपाल सिंह धामा, श्री रमेश आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री आचार्य सानन्द, श्री वैद्य गया प्रसाद, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती शारदा आर्या, श्री धमेन्द्र आर्य, श्री रामेश्वर दयाल आर्य, श्री संजय आर्य, श्री कंवरभान क्षेत्रपाल, श्री वेदव्रत, श्रीमती सुषमा आर्या, श्री प्रद्युमन सिंह तंवर, श्री नवनीत अग्रवाल, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री सुधा गुप्ता एवं अन्य अनेक महानुभाव उपस्थित रहे। दि.आ.प्र. सभा के महामंत्री ने सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं एवं मित्रों का इस महान यज्ञ में आहुति देने हेतु धन्यवाद किया।

सभा के स्टाल के अतिरिक्त परोपकारिणी सभा और आर्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द ने भी साहित्य प्रचार स्टाल लगाया। पुस्तक मेले से संबंधित अन्य समाचार अगले अंकों में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

सभा अधिकारियों कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ बांटा सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य

वैदिक स्टाल पर अधिकारियों सहित मुस्लिम भाईयों ने भी प्राप्त किये सत्यार्थ प्रकाश

वैदिक विद्वानों व सन्यासियों द्वारा किया गया शंका समाधान

वैदिक स्टाल पर साहित्य का अवलोकन करता जनसमूह

पुस्तक मेला दर्शकों की प्रतिक्रियाएं

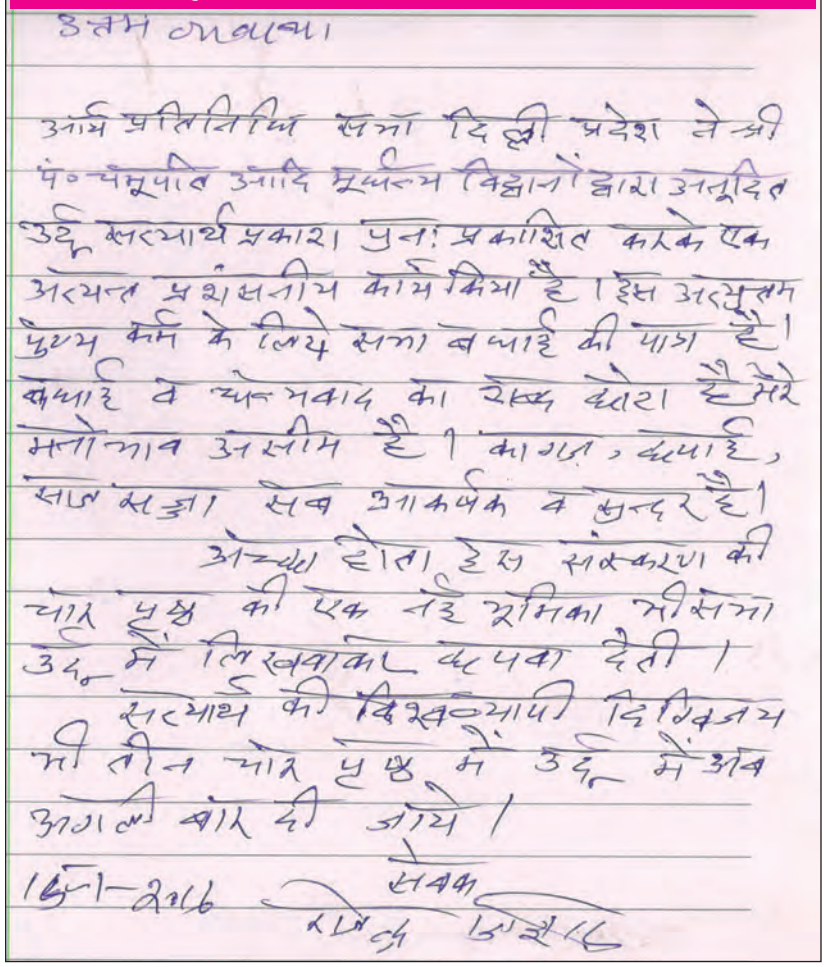

उत्तम व्यवस्था।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश ने श्री पं० चमूपति आदि मूर्धन्य विद्वानों द्वारा अनुदित उर्दू सत्यार्थ प्रकाश पुनः प्रकाशित करके एक अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है। इस अत्युत्तम पुण्य कर्म के लिये सभा बधाई की पात्र है। बधाई व धन्यवाद का शब्द द्वारा है मेरे मनोभाव असीम है। कागज, छपाई, साज सज्जा सब आकर्षक व सुन्दर है।

अच्छा होता इस संस्करण की चार पृष्ठ की एक नई भूमिका जो सभा उर्दू में लिखवाकर छपवा देती। सत्यार्थ की विश्वव्यापी दिग्विजय भी तीन चार पृष्ठ में उर्दू में अब अगली बार दी जाये।

16-1-2016 सेवक

रमेश [illegible]

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की पेशकश वैदिक गीतों-भजनों को बनाएं अपनी मोबाईल कॉलर ट्यून

Hota Hai Sare Desh Ka

Download this song on your mobile as Caller Tune

airtel	Set Tune DIAL 5432114686561	Idea	Set Tune DIAL 567895021680
Videocon	SMS CT 341554 to 543211	BSNL E & S	SMS BT 5021680 to 56700
BSNL N & W	SMS BT 804058 to 56700	MTS	SMS CT 10545240 to 55777
Vodafone	SMS CT 5021680 to 56789	uninor	Set Tune DIAL 52222779057
TATA	SMS CT 5021680 to 543211	MTNL	SMS PT 5021680 to 56789
Aircel	SMS DT 804058 to 53000	Reliance	Set Tune SMS CT 6312075 to 51234
uninor	Set Tune DIAL 522225021680		

Humko Sab Duniya Jane

Download this song on your mobile as Caller Tune

airtel	Set Tune DIAL 5432114686562	Idea	Set Tune DIAL 567895021681
Videocon	SMS CT 341555 to 543211	BSNL E & S	SMS BT 5021681 to 56700
BSNL N & W	SMS BT 804060 to 56700	MTS	SMS CT 10545241 to 55777
Vodafone	SMS CT 5021681 to 56789	uninor	Set Tune DIAL 52222779061
TATA	SMS CT 5021681 to 543211	MTNL	SMS PT 5021681 to 56789
Aircel	SMS DT 804060 to 53000	Reliance	Set Tune SMS CT 6312076 to 51234
uninor	Set Tune DIAL 522225021681		

शोक समाचार

श्री अनिल तलवार जी को मातृ शोक

आर्य समाज सुदर्शन पार्क के संरक्षक श्री अनिल तलवार जी की माता जी एवं वैदिक विद्वान, वेद प्रचार मण्डल और केन्द्रीय सभा, आर्य समाज सुदर्शन पार्क एवं मोती नगर को सुशोभित करने वाले श्री भारत मित्र शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावंती जी का 11 जनवरी 2015 को 97 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गयीं। दिनांक 14 जनवरी 2015 को आर्य समाज सुदर्शन पार्क में एक शोक सभा आयोजित हुई जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

कर्मठ आर्य समाजी श्री वरुण मुनि जी दिवंगत

श्री वेद भूषण आर्य के पिता प्रसिद्ध लेखक एवं कर्मठ आर्य समाजी कार्यकर्ता कोटा के श्री वरुण मुनि जी (डॉ. राम कृष्ण आर्य) दिनांक 14 अक्टूबर 2015 को 74 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। श्री वरुण मुनि जी आर्य लेखक परिषद एवं आर्य परिवार संस्था कोटा के संरक्षक थे।

सुभाष आर्य जी की धर्मपत्नी दिवंगत

आर्य समाज पुष्पांजलि के उप प्रधान श्री सुभाष आर्य जी की धर्मपत्नी आशा रानी का दिनांक 10 जनवरी 2016 को 64 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। जिसकी अंत्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बच्चों के लिए गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में

गणतंत्र दिवस के अवसर पर अमर शहीद क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित विशेष कॉमिक्स बच्चों को उपलब्ध कराएं

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

वैदिक विद्वानों के प्रवचन सुनकर, निकल सका अंधविश्वास की दलदल से

मेरा जन्म 2 फरवरी 1991 में हरियाणा, जिला जींद के एक छोटे से गांव शामलो खुर्द के एक पौराणिक परिवार में हुआ। मेरे पिता जी बचपन में मेरे लिए कहानियों की किताबें लेकर आते जिसने मुझे बुरी लतों से दूर रहने की प्रेरणा मिली। लेकिन अंधविश्वास ने मुझे व मेरे पूरे परिवार को बुरी तरह से जकड़ रखा था। जब मैं 14-15 वर्ष की आयु में बीमार पड़ गया तो मेरे माता-पिता मुझे लेकर बहुत चिंतित रहने लगे। एक दिन पिता जी मुझे लेकर पौराणिक पंडित के पास ले गए। पंडित ने मेरा हाथ देखकर मुझ पर भारी संकट बताया। इस संकट को टालने के बहाने उसने मेरे पिता जी से बहुत सारे रुपये भी ऐंठ लिये। घर में और जोर-शोर से पूजा-पाठ होने लगी। लेकिन मेरी हालत लगातार बिगड़ती ही जा रही थी। मेरे पिता जी ने एक दिन गुस्से में आकर सारे पूजा-पाठ बंद कर दिये और मुझे डॉक्टर के पास ईलाज के लिए ले जाया जाने लगा जिससे मैं धीरे-धीरे ठीक हो गया। मेरे पिता जी को कुछ समय के लिए यह बात समझ में आ गई थी कि मूर्ति पूजा एक अंधविश्वास है। लेकिन आस-पड़ोस के लोगों के विचार सुनने के बाद घर में फिर से मूर्ति पूजा शुरू हो गई। मैं मंगलवार को हनुमान जी के व्रत करता और उनकी मूर्ति पर प्रसाद चढ़ाता था। 3 नवम्बर 2014 को मेरी शादी एक आर्य समाज परिवार में हुई। मुझे गुरुकुल की पढ़ी-लिखी युवती धर्मपत्नी के रूप में मिली। मेरा हवन में भी बचपन से ही काफी गहरा लगाव था। मेरे घर 2 से 3 महीने में पूजन के बाद हवन होता ही रहता था, खुशी-खुशी सारा परिवार हवन में भाग लेता था। मेरी पत्नी भी घर में हर रोज हवन करने लगी, जिससे मैं और मेरा परिवार स्वयं को बड़ा ही भाग्यशाली समझते कि हमारे घर में अब हर रोज हवन होता है। लेकिन मैंने मूर्ति पूजा अभी भी नहीं छोड़ी थी, मैं जब भी मूर्ति पूजा करता तो मेरी पत्नी इस बात से चिढ़ती और मुझे समझाने का प्रयास करती लेकिन मैं नहीं माना। कुछ दिन बाद ही उनके बड़े भाई आजीवन ब्र. सुरेन्द्र आर्य जी का फोन मेरे पास आया। उन्होंने कहा कि सत्यपाल जी रोजड़ में एक शिविर लगने वाला है और बड़े-बड़े विद्वान लोगों के विचार वहां सुनने को मिलेंगे। मैं अपने पूरे परिवार के साथ रोजड़ गया। वहां मुझे विद्वानों की बात समझ में आई और मुझे पता चला कि जिनको मैं ईश्वर समझकर मूर्ति के रूप में पूजता हूं वो ईश्वर नहीं बल्कि बीते जमाने के महान पुरुष हुए हैं। जीवन में सफलता मूर्ति के रूप में इन्हें पूजने से नहीं बल्कि इनके पदचिह्नों पर चलने से मिलेगी। रोजड़ से आने के कुछ दिन बाद ही घर में एक छोटा सा कार्यक्रम रखा गया, जिसमें आजीवन ब्र. सुरेन्द्र आर्य जी ने मेरे सारे परिवार को यज्ञोपवीत धारण करवाया। उसके बाद से मैं अपनी पत्नी और उनके भाई की प्रेरणा से विशुद्ध आर्य समाजी बन गया।

-सत्यपाल आर्य

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ डाक-'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

One and Only one God

"Neither second, nor third not even fourth is He said to be. The enlightened soul realises this Lord as the one and only acceptable one."

"He oversees all, that who breathes as well as that who breathes not."

God alone is the originator and creator of this universe, not assisted in His supremacy by anyone, second, third or fourth. The Purpose of creation is the betterment of souls leading them to liberation. The Creator shapes the primordial matter (prakrti), His muti-dimensional canvas to build the Universe. His art is beyond our comprehension. It is sustained by infinite principles and protected by undecaying eternal devices. Man from the earliest stage of civilisation to this day has been striving to know something about the working of this great. Divine Architect.

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।

य एतं देवमेकवृतं वेद।। (Av.xiii.4.16)

Na dvitiyo na trtiyascaturtho napyucyate.

Ya etam devamekavrtam veda..

इस सर्वस्मै वि पश्चति यच्च प्राणति यच्च न।

य एतं देवमेकवृतं वेद।। (Av.xiii.4.19)

Sa sarvasmai vi pasyati yacca pranati yacca na.

ya etam devamekavrtam veda..

Skambha Brahma

By Skambha is meant the frame of Creation in Vedic terminology. It is also regarded as the main pillar of Creation. An enquiry about Skambha is an enquiry into the nature of Brahma. In this connection, two verses of Chapter X, hymn 7 are quoted below:

"Within Skambha, the support of the Universe, are the world contained; within Skambha is the penance (tapah); through Skambha, I have known you directly and in complete shape as conained and manifested as the resplendent Lord."

"Great are those bounties of Nature, that have sprung from the non-existent (asatah). That non-existent is just a part of Skambha, say the wise."

स्कम्भे लोकाः स्कम्भे तपः स्कम्भेऽध्यृतमाहितम्।

स्कम्भं त्वा वेद प्रत्यक्षमिन्द्रे सर्वं समाहितम्।। (Av. x.7.29)

Skmbhe lokah skambhe tapah skambhe dhyrtmahitam.

skambham tva veda pratyakshyamindre sarvam samahitam..

बृहन्तो नाम ते देवा येऽसतः परि जज्ञिरे।

एकं तदं स्कम्भस्यासदाहुः परो जनाः।। (Av. x.7.29)

Brhanto nama te devah ye satah pari jajnire.

ekam tadangam skambhasyasadahuh paro janah..

Divine Art Beyond Decay and Death

He is so close, He never deserts him. Though so close, the other does not see him. look at the Lord' s art that never dies nor decays.'

The Lord eists within every thing; there is nothing beyond Him. The soul, the tiny little self gets warmth from the Lord, the Supreme Self. It basks in the Divine sunshine to get over the shivering cold. So close is the Lord that the soul cannot go beyond Him and yet it is within Him but sees Him not. The verse says, "Ye men, visualise the Art of the Lord with humility and you would approach the Artist."

An artist is to be seen only through his art and a sculptor through his creative activity. The Lord is the Divine Artist and we meet Him in His Divine Art only. Come out of the artificial house and look at the stars in the blue canopy and admire the marvellous Creaion of the Creator. Listen to the music of flowing streams in the craddle of snowclad mountains through which the Divine Artist sings. Look at a flower, its petals, and tiny little filaments, Surely you will be admiring the everlasting glory of the divine Artist. The Divine Art contiues untarnished and is immortal. It never dies nor decays. It is eternally new.

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। (Av. x.8.32)

Anti santam na jahatyanti santam na pasyati.

devasya pasya kavyam na mamara na jiryati..

To Be Continue...

प्रेरक प्रसंग

श्रद्धा सजीव होकर झूमती थी

आर्य समाज के आदि काल में आर्यों के सामने एक समस्या थी। अच्छा गाने वाले भजनीक कहां से लाएं। इसी के साथ जुड़ी दूसरी समस्या सैद्धान्तिक भजनों की थी। वैदिक मन्तव्यों के अनुसार भजनों की रचना तो भक्त अर्मीचन्द जी, चौधरी नवलसिंह जी, मुंशी केवलकृष्ण जी, वीरवर चिरंजीलाल और महाशय लाभचन्दजी ने पूरी कर दी, परन्तु प्रत्येक समाज को साप्ताहिक सत्संग में भजन गाने के लिए अच्छे गायक की आवश्यकता होती थी। नगर कीर्तन आर्य समाज के प्रचार का अनिवार्य अंग होता था। उत्सव पर नगर कीर्तन करते हुए आर्य लोग बड़ी श्रद्धा व वीरता से धर्मप्रचार किया करते थे।

पंजाब में यह कमी और भी अधिक अखरती थी। इसका एक कारण था। सिखों के गुरुद्वारों में गुरु ग्रन्थ साहब से भजन गाये जाते हैं। ये भजन तबला बजाने वाले रबाबी गाते थे। रबाबी मुसलमान ही हुआ करते थे। मुसलमान रहते हुए ही वे परम्परा से यही कार्य करते चलते आ रहे थे। यह उनकी आजीविका का साधन था।

आर्य समाज के लोगों को यह ढंग न जंचा। कुछ समाजों ने मुसलमान रबाबी रखे भी थे फिर भी आर्यों का यह कहना था कि मिरासी लोगों या रबाबियों के निजी जीवन का पता लगने पर श्रोताओं पर उनका कोई अच्छज्ञ प्रभाव नहीं पड़ेगा। सिखों की भांति भजन लोग सुनना चाहते थे।

तब आर्यों ने भजन मंडलियां तैयार करनी आरम्भ कीं। प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी मण्डली होती थी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब सिन्ध में सब प्रमुख समाजों ने भजन मंडलियां बना लीं। महात्मा मुंशीराम वकील, न्यायाधीश केवलकृष्णजी (मुंशी), महाशय, शहजादानन्दजी लाहौर, चौधरी नवलसिंह जी जैसे प्रतिष्ठित आर्य पुरुष नगर कीर्तनों में आगे गाया करते थे। टोहना (हरियाणा) के समाज की मण्डली में हिसार जिले के ग्रामीण चौधरी जब जुड़कर दूरस्थ समाजों में जसवन्तसिंह वर्मा जी के साथ गर्जना करते थे तो समां बंध जाता था।

लाहौर में महाशय शहजादानन्दजी को भजन मंडली तैयार करने का कार्य सौंपा गया। वे रेलवे में एक ऊंचे पद पर आसीन थे। उन्हें रेलवे में नौकरी का समय तो विवशता में देना ही पड़ता था, उनका शेष सारा समय आर्य समाज में ही व्यतीत होता था। नये-नये भजन तैयार करने की धुन लगी रहती। सब छोटे-बड़े कार्य आर्य लोग आप ही करते थे। समाज के उत्सव पर पैसे देकर अन्यों से कार्य करवाने की प्रवृत्ति न थी इसका अनूठा परिणाम निकला। आर्यों की श्रद्धा-भक्ति से खिंच-खिंचकर लोग आर्य समाज में आने लगे। लाला सुन्दरदास भारत की सबसे बड़ी आर्य समाज (बच्छोवाली) के प्रधान थे। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर जब कोई भजन गाने के लिए वेदी पर बैठता तो लाला सुन्दरदासजी स्वयं तबला बजाते थे। जो कार्य मिरासियों से लिया जाता था, उसी कार्य को जब ऐसे पूज्य पुरुष करने लग गये तो यह दृश्य देखकर अपने-बेगाने भाव-विभोर हो उठते थे। ऐसा लगता था मानो श्रद्धा सजीव होकर झूम रही है।

संस्कृतम्

आतंकवादः, समस्या, समाधानं च

आतंकवादोऽस्ति दोषाय, हिंसायै अहिताय च।
तान्निराकरणं कर्तुं, सर्वे सन्तु सचेतसः।।

कः आतंकवादः? उचितेन अनुचितेन वा साधनेन स्वस्य अभीष्ट-साधनम् आतंकवादः।

यथा-परधन-हरणम्, परस्त्रीहरणम्, परक्षेत्रहरणम्, अन्यस्य सर्वस्व-हरणेन स्वोन्नति-साधनम्।

अनुचितसाधनानाम् उपयोगेन परस्य हत्या, परस्य धन-हरणम् इत्यादिकं क्रियते।

आतंकवादस्य कारणनि-संक्षेपतः एतानि कारणानि सन्ति- स्वार्थपरता स्वार्थनिबद्धा संकुचिता दृष्टिः वा, आतंकवादस्य मूलं कारणं वर्तते। एषैव स्वार्थदृष्टिः साधनरूपेण आतंकवादं पोषयति प्रसारयति च। यथा-क्षेत्रवादः, भाषावादः, धर्मान्धता, आर्थिकी विषमता, समन्वयस्य अभावः। न्यायपालिकाया दुर्बलत्वम्, नैतिक-मूल्यानां ह्रासः, प्रशासनस्य निष्क्रियत्वम्, राजनीतिकं वा कारणम्।

अद्यत्वे क्षेत्रवादो विशेषरूपेण वैमनस्यं जनयति। भारते वर्गविशेषः स्वीयां सांस्कृतिकीं श्रेष्ठतां साधयितुं सांप्रदायिकं संघर्षं प्रेरयति। चौर्यादि-कार्येषु आतंकवादस्य मूलकारणम् आर्थिकं वर्तते। शिक्षितेषु अवृत्ति-समस्या चौर्यादिकस्य कारणं वतर्त। ते धनार्थम् अपराधवृत्तिम् आश्रयन्ते।

आतंकवादस्य कुप्रभावः-आतंकवादस्य कुप्रभावः सांस्कृतिकम् आर्थिकं सामाजिकं धार्मिकं च पक्षं दूषितं करोति। आतंकवादस्य कारणेन समाजे हिंसा, अनैतिकता, अराजकता च वर्धते। जनताया मनोबलं क्षीयते, असामाजिकानाम् उत्साहः वर्धते।

आतंकवादस्य निरोधोपायाः- आतंकदस्य निरोधार्थं राष्ट्रे नैतिक-शिक्षा अनिवार्या स्यात्। नैतिकं शिक्षणं मनुष्ये कर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानं प्रसारयति। आतंकवादस्य निरोधार्थं राष्ट्रीय-प्रशासनस्य महती भूमिका वतर्त। प्रशासनम् असामाजिकं तत्वं समूलं विनाशयेत्। स्वदंडनीति कठोरां कुर्यात्, 'दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वोः, दण्ड एवाभिरक्षति'। यदि दण्डव्यवस्था कठोरा स्यात्, तदा असामाजिकानां तत्त्वानां मनोबलं क्षीयते। शिक्षणालयेषु अपि आतंकवादस्य वि/द्धं प्रशिक्षणं स्यात्।

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आतंकवाद और निदान!

आतंकवाद आज पूरे विश्व की समस्या बन चुका है, जहां देखो वहीं इसका कहर हो रहा है। आतंक शब्द अपने आप में किसी अप्रिय विनाशकारी भावों को स्पष्ट करता है। किसी जमाने में दैत्य अथवा राक्षस नाम से जिन्हें जाना जाता था इस युग में उसी का प्रतिबिम्ब आतंकवाद के रूप में देखा जा रहा है।

आतंकवाद जिस तेजी से विगत 8-10 साल में बढ़ा है यदि उसी गति से आगे चलता रहा तो जनजीवन मुश्किल में पड़ जावेगा, सामान्य रूप से चलने वाली जीवन पद्धति छिन्न-भिन्न होकर अनिश्चित हो जावेगी। जन सामान्य की सम्पत्ति, परिवार व जीवन अदृश्य हाथों में गिरफ्त होकर भय के साये में दबा रहेगा। यह सब क्यों? और इससे नियन्त्रण कैसे पाया जा सकता है? इस पर आज पूरे विश्व को विचार कर इसका स्थायी हल निकालना चाहिए।

कहा गया है अपराध करने वाले से अधिक दोषी अपराध सहने वाले को बताया गया है। इस दृष्टि से हमारी भूमिका अपराध सहने वालों में है। तो प्रश्न उठता है कि क्या हम दोषी हैं? जी हां हम दोषी हैं। दोषी इसलिए हैं कि हम दब्बू, स्वार्थी, डरपोक बनकर यह सब चुपचाप सहन कर रहे हैं। हमने समाज के या राष्ट्र के दर्द को कभी अपना दर्द नहीं समझा। पड़ोसी के घर में लगी आग को हमने अपनी क्षति नहीं माना। भूल गए कि कभी हम पर भी ये मुसीबत आ सकती है।

कश्मीर सनातन धर्मियों से खाली हो गया, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड में भारत की मूल विचारधारा वाले अल्पसंख्यक बन गए, केरल में यही सब हुआ। बिहार, छत्तीसगढ़, नक्सली अत्याचारों को सहन कर रहा है। हमने कब इनको गंभीरता से लिया? इसका एकमात्र कारण है राष्ट्रीय भावना का अभाव। समग्र देश और देशवासियों से हमारा वह रिश्ता नहीं है जो स्वजनों की अपनी सम्पत्ति के लिए होता है।

किसी एक स्थान पर होने वाले अत्याचार को हमने अपनी क्षति नहीं, उस क्षेत्र की क्षति माना, उसका परिणाम उन्हें भुगतने के लिए छोड़ दिया।

काश यह पूरा देश किसी एक दुर्घटना या आतंक के विरूद्ध एक आवाज में खड़ा हो जाता तो इस जहर को वहीं समाप्त कर दिया जाता।

इस गलती को मानसिक कमजोरी को जब तक पूरा देश दूर नहीं करेगा तब तक इस समस्या का स्थायी निदान नहीं हो सकता है।

दूसरा कारण हमारे अपनों से ही हमें खतरा है भाषा, प्रान्त, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय भावना का अभाव और निज स्वार्थ हेतु राष्ट्र में अव्यवस्था फैलाने वाली ताकतों का सहयोग। यह सब आस्तीन के सांप की तरह पल रहे हैं। चूंकि इस देश में रहते हुए ही वे इन गतिविधियों से जुड़े हैं, पता ही नहीं चल पाता कि किस पर भरोसा करें, किस पर नहीं। दोस्त और दुश्मन का अन्तर ही समझ में न आवें तो धोखा खाना तो स्वाभाविक है। क्योंकि -

ये देश कभी ना हारा, तीरों से, तलवारों से।
हानि उठाना पड़ी सदा, घर की दीवारों से।।

ये स्थिति सबसे खतरनाक है, बाहरी दुश्मनों से तो सामना किया जाना संभव है किन्तु जो अपने बनकर विश्वास में विष देने लगे तो क्या होगा। गालिब का शेर है-

गैरों से तमन्नाएं वफा क्या करना।
अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं।।

पठानकोट आतंकी हमले में कुछ इसी प्रकार की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। तीसरी सबसे दुखद स्थिति इस आतंकवाद को आश्रय देने के लिए वर्तमान राजनीति भी है। येन केन प्रकारेण अपना प्रभुत्व जमाने के लिए ऐसे कुछ समाजद्रोही पक्षों को आश्रय दिया जाता है। निर्वाचन के पश्चात फिर उन्हें अपने आका का पूर्ण आशीर्वाद व संरक्षण प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त दलगत, स्वार्थ से पूर्ण राजनीति ऐसी समस्याओं के समय राष्ट्रहित न देखते हुए सत्तारूढ़ दल के विरूद्ध मोर्चा खोल देती है। राजनेता ऐसे संवेदनशील अवसर पर भी राष्ट्रहित में लिए जाने वाले निर्णयों का विरोध करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। अपना राष्ट्रीय कर्तव्य भूलकर विरोध करने में ही अपनी विपक्ष की भूमिका निर्वाह करते हैं।

इससे राष्ट्र की आतंकवाद का विरोध करने, उससे निपटने की शक्ति में कमजोरी आती है देश एकजुट होकर खड़े होने के स्थान पर बट जाता है। इसका लाभ आतंकी व उनके एजेन्टों को मिलता है। आतंकवाद के खिलाफ उठाए जाने वाले कड़े कदमों का तथा कुछ संदिग्ध सूत्रों पर कड़ाई जब की जाती है तब पार्टी या साम्प्रदायिकता का राग अलापा जाने लगता है। इस प्रकार प्रशासन के कार्यो में अवरोध उत्पन्न किया जाता है।

शासन की भी कुछ कमजोरी है शासन दुष्टों के साथ और सज्जनों के साथ समान व्यवहार करके संभावित जन विरोध से बचना चाहता है। जबकि असामाजिक व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को शक्ति के साथ कुचल देना चाहिए।

कहा गया, इन तीन की सफलता इसी में निहीत है, महिला में हो शरम, व्यापारी हो नरम और प्रशासन हो गरम।

किन्तु स्थिति ऐसी नहीं है। बड़े से बड़े अपराधी भी जेलों में पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त कर लेते हैं। राजनीति संवरक्षण में दण्ड के स्थान पर राहत प्राप्त कर लेते हैं सरकार व प्रशासनिक ढ़ांचे की इस नीति से अपराधी बेखौप हो गए और जन सामान्य उनके इन कारनामों से भयग्रस्त हो गए। शासन की नीति सज्जनों को संवरक्षण सहयोग और दुष्टों के प्रति कठोर से कठोर दण्ड की होना चाहिए। तभी यह राष्ट्र अवांछित गतिविधियों और आतंकवाद नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्याओं से मुक्त हो सकता है। इसलिए कहा गया, वैदिक संस्कृति का आदर्श है -

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्त्तते।

शस्त्रों से ही राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है।

भीष्म पितामह कहते हैं -

अग्रत चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।
इदं शास्त्रमिदं शस्त्रं शापादपि शरादपि।। **-महाभारत**

पहले शास्त्र, फिर शस्त्र। पहले प्यार, फिर तलवार। पहले वार्ता - ध्यान, फिर शर-सन्धान।

इस प्रकार इस आतंकवाद या राष्ट्रीय शत्रुओं के विरोध में प्रत्येक नागरिक, प्रशासन व राजनेताओं को अपने राष्ट्रीय धर्म का ईमानदारी से पालन कर एक स्वर में एक साथ इसके विरोध में खड़े होना चाहिए तभी इसका अन्त संभव है।

धन्य

धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख-दुःख आदि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्यधर्म का त्याग कभी नहीं करते। - संस्कारविधिः, गृहाश्रमप्रकरणम

धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान लेकर जब तक विद्या पूरी न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

- सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। - सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

- प्रकाश आर्य, महू

विश्व पुस्तक मेला - 2016

सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची

गतांक से आगे

33. विवेक अग्रवाल	10000/-
34. जगदीश सिंह शर्मा	2000/-
35. आर्य समाज दरियागंज	5000/-
36. जगदीश चन्द्रा	5000/-
37. प्रनाद भट्टाचार्य	1000/-
38. नन्दनी साहू	5000/-
39. रमाकांत सिंघल	1000/-
40. आर्य समाज कालकाजी	4000/-
41. आर्य समाज कालकाजी ऑल मैम्बर	500/-
42. आर्य समाज मंदिर किदवई नगर	1100/-
43. आर्य समाज इन्द्रपुरी	2100/-
44. डॉ. जे.एस. बाल्यान	1100/-
45. वेलांकी रघुवेंद्र राव	1000/-
46. अभिषेक अग्रवाल	260/-
47. सरिता गोयल	2000/-
48. ओ.पी. गोयल	4000/-
99. नितिन जिंदल	1500/-
50. राम नारायण	3000/-
51. आर्य समाज नरेला	4000/-
52. नीरज सिंघल	2000/-
53. पारुल गुप्ता	2000/-
54. राम कुमार अग्रवाल	3000/-
55. सुभाष पूनिया	11000/-
56. उर्मिला राजौरिया	5000/-
57. विजय कुमार गुप्ता	3500/-
58. साहिल मित्तल	3000/-

क्रमशः

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

18 जनवरी 2016 से 24 जनवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21 जनवरी 2016/ 22 जनवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 जनवरी, 2016

वेद-विद्या शोध संस्थान (न्यास) द्वारा नेपाल में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, योगाभ्यास एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

वेद-विद्या शोध संस्थान (न्यास) के तत्वावधान में दिनांक 23 जनवरी से 22 फरवरी 2016 के मध्य जिला सिन्धुपाल चौक (चाईना बार्डर) नेपाल में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, योगाभ्यास एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में लगभग 40 टीन देशी घी, 8 क्विंटल सामग्री उपयोग होने का अनुमान है। यज्ञ प्रेमी महानुभावों से मुक्त हस्त से सहयोग करने की प्रार्थना है ताकि धार्मिक, सामाजिक और भौगोलिक रूप से महत्व पूर्ण यह राष्ट्र हमारी महबूत भुजा बन सके।

संयोजक- स्वामी सम्पूर्णानन्द, सम्पर्क सूत्र : 94160-33160, 98916-60620, 94166-38032, 93135-64571

आवश्यकता है

आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली, को एक सुयोग्य आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। सभी वैदिक संस्कार कराने में दक्ष, जो समाज में दैनिक यज्ञ भी करा सके। योग्यता अनुसार मानदेय एवं आवास, बिजली-पानी की नि:शुल्क सुविधा मिलेगी। **संपर्क करें : विजय भाटिया, प्रधान मो. 9312225800**

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा

दस्त-पेचिस में आव व खून आए

1. 100 ग्राम दही में दो केले मिलाकर प्रात: सायं प्रयोग करें।
2. इस्बगोल की भूंसी एक चम्मच दही 100 ग्राम में मिलाकर प्रात: सांय लें।
3. चहार के बीज पीसे 5 ग्राम प्रात: पानी से तीन चार दिन प्रयोग करें।
4. इस्बगोल, बही दाना भूना पिसा 10-10 ग्राम को पानी 100 ग्राम में भिगो दें। फूल जाने पर खांड मिलाकर दिन में तीन बार प्रयोग करें।
5. बीज निकले तीन मुनक्कों में आधा ग्राम भुनी फिटकरी पिसी गेरकर दिन में तीन बार पानी से लें।
6. काली मिर्च 10 ग्राम भांग के बीच पांच ग्राम पीस कर आधारा ग्राम दवा मुनक्का में रख कर प्रात: सांय पानी से लें।
7. सौंठ, जीरा, तेजपात 20-20 ग्राम कूट छान कर तीन ग्राम प्रात: सांय पानी से लें।
8. दुग्धी बूटी 10 ग्राम को पानी में पीसकर प्रात: सांय पिलायें।
9. सुखी बेल गिरी, जीरा सफेद 20-20 ग्राम कूट छान कर 4-4 ग्राम प्रात: सांय पानी से लें।

'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना'

यज्ञ से होने वाले लाभों को जन-साधारण तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया हुआ है। जिसमें सभा द्वारा नियुक्त पुरोहित श्री सत्य प्रकाश जी घर-घर जाकर यज्ञ कार्य सम्पन्न कराते हैं । इस यज्ञ को सम्पन्न कराने का सम्पूर्ण व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वहन करती है। क्यों न आप भी आज ही इस महाकार्य के महायज्ञ में अपनी आहूति भी डालें। यज्ञ कराने के लिए श्री सत्य प्रकाश जी से मो. 09650183335 पर सम्पर्क करें।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का 44वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 13 व 14 जनवरी 2016 को वैदिक वाड्मय के विद्वान पूज्य समर्पणानन्द जी के स्मृति-दिवस के उपलक्ष्य में वेदानुशीलन का अतीत एवं अनागत विषय पर शोध-गोष्ठी एवं मकर संक्रांति के पावन पर्व पर पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती महाराज के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति सम्पन्न हुई। समारोह में सांसद सत्यपाल सिंह मुख्य यजमान रहे। ब्रह्मचारियों द्वारा महान् क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन पर अभिनीत संस्कृत नाटक ने दर्शकों को अभिभूत कर दिया।

चुनाव समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का चुनाव नागपुर में सम्पन्न

प्रधान - **पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती**

मंत्री - **श्री अशोक यादव, नागपुर**

कोषाध्यक्ष- **श्री यशपाल आर्य, नांदुरा**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह